माह भग

धप की हल्की तपिश जिस्म का सक दन लगी ता नीता की आख लग गई। सबस छाट बट पवश की शादी क बाद गिन्नी न घर की जिम्मवारी ठीक स ल ली थी। बडी बह अमरिका की थी उस भारत आन का काई शाक नही था। हा मझली यही की थी लकिन आशीष क कछ दास्त आस्टलिया चल गए ता उसन भी वही जान की जिद ठान ली। अच्छी खासी पक्टिस छाडकर व भी वही बसन चल गए थ। पापा का साथ दिया सबस छाट बट पवश न। अन्त म गिन्नी जसी बह पाकर नीता सतष्ट थी। अचानक नीद म ही एसी खासी मचली कि नीता का एमरजसी म दाखिल कराना पडा। दमा विगडन पर जानलवा बन जाता ह। कछ एस ही हालात बन गए थ। रघ आर नीता की जाडी ़फ्लव बर्ड्स√क नाम स जानी जाती थी। उनकी आपसी समझ व पम की मिसाल दी जाती थी जानन वाला म। आज रघ की नीता उसक समक्ष बसध पडी थी। उसकी आर दख दख कर रघ का दिल डब रहा था। पिछल पतीस वर्षा स दाना का दिन रात का साथ था। जीवन क ढरा उतार चढाव दाना न साथ साथ दख थ। फिर आज आज रघ क्या कर ®

विरह पीडा सहन क विचार मात्र स रघ क मन म एक अजाना भय घर कर रहा था। नीता का विछाह उसक लिए अत्यत पीडादायी ह। इसकी कल्पना स ही उसका सारा शरीर सिहर उठा। क्या नीता का साथ किसी भी क्षण समाप्त हा जाएगा ®रघ का चारा आर स काल काल साय अपन पर हावी हात दिखन लग। अपन निराशावादी दृष्टिकाण स घबराकर उसन नीता क पास आर पास हा उसका हाथ कस कर उकड लिया। यदि सावित्री अपन सत्यवान का मात क मह स वापिस ला सकती थी ता क्या क्या वा नही®वह बठा अपलक नीता का निहारता रहा। उसक भीतर क सन्नाटा स रघ का अपन लिए एक पकार सनाई द रही थी जिस वह अतहीन दरी स सन सकता था। नीता की बद आखा म पलका क नीच पीडा न डरा डाल लिया था। जब वह बीच बीच म कराहती ता रघ का सात्वना व प्यार भरा स्पर्श उस अपन अग सग हान का एहसास दिलाता। वह उस जताता कि वा उसकी पीडा भी उसक साथ जी रहा ह। नीता बीच बीच म अपन वाझिल पलका क किवाड खालती ता उनम छिप निर्मल जल क कछ माती उसकी आखा की कार स बाहर ढलक पडत आर वह एस मस्करा पडती जस बारिश क बाद खिली हरी दब

कछ नई दवाइया दी गई पर सास ठीक नही चलती थी। दिन रात क लिए आक्सीजन लग गई थी। ग्लकाज भी चढाया जा रहा था। अपना काम काज खाना पीना सर सभी कछ भलकर रघ नीता क सिरहान बठ गया। नीता की हालत म काई सधार नजर नही आ रहा था। पम व सवा स गिन्नी न सास का मन जीत लिया था। दाना म बहत प्यार था। सा वह आर पवश भी दखी थ। मा का दखकर बार बार उनकी आख भर आती थी। पवश न अमरिका व आस्टलिया दाना भाइया का फान करक मा क विषय म बताया। विनीष व आशीष सनत ही मा क प्यार म तडप उठ। उन्हान पवश का सात्वना दी कि धीरज रख मा ठीक हा जाएगी। फान पर सभी रा रह थ। व उसी दिन वहा स चल पड। मा का प्यार ता सबक नाड की डार स सीधा जडा था।

पापा का बताया कि सब आ रह ह। रघ न साचा कि सार बच्च क्या आखिरी बार मा स मिलग। क्या फिर कभी उन्ह उनकी मा नही मिलगी। उसस अपन बच्चा क दख की कल्पना भी असह्य थी। दखातिरक क कारण बिन मा क बच्चा क दख का वह साच ही नही पा रहा था। बटी अनन्या परिवार सहित उसी दिन पहच गई थी। उसक आस थमन का नाम नही ल रह थ। वह हर वक्त पापा क साथ साथ थी। दखन आए कछ बजर्गा न सलाह दी ता गगा जल मगा लिया गया। एक एक बद नीता क मह म अनन्या डालती रही। अमृतवाणी क पाठ की कसट लगा दी गई। अस्पताल दखन आन वाला का ताता बध गया। दख की रात बडी लम्बी ,मीला का सफर तय

©Veena Vij

करती लगती ह। काट नही कटती ह। सा आखा म सवकी रात कटी।चारा आर भयानक मात सा सन्नाटा फला हआ था।काई किसी स वात नही कर रहा था।अगल दिन रात का अमरिका स विनीश व रूहला दाना वच्चा क साथ पहच।विनीश मा क परा स लिपटकर फट फट कर राया।सभी रा रह थ।कही भी आशा की किरण नही दिखाई द रही थी।आधी रात का आशीष व शचि भी वट क साथ आ पहच।मा की हालत दखकर आशीष मा क मह स मह जाडकर रान व मा का प्यार करन लगा।वच्चा न मा का सदव सन्दर व स्मार्ट वन ही दखा था।मा की ववसी व लाचारी किसी क गल नही उतर रही थी।डाक्टर्स न ता कह ही दिया था कि जिन्ह आप वलाना चाहत ह वला ल वचन की उम्मीद नही ह।सा पवश न रात हए सव रिश्तदारा व अपना का फान कर दिए थ। व सव भी पहच रह थ।गिन्नी न डाइगरूम का फर्नीचर उठवा दिया ! दरिया विछवा दी।सवक वच्च इकट्ठ हाकर धमा चाकडी मचा रह थ।गिन्नी सवका सभाल रही थी।पवश व उसक कछ दास्ता न खान का व विस्तरा का इतजाम अपन जिम्म लिया।आखीरकार इतन लागा का सभालना भी ता था।पापा अनन्या व दाना भाई भी वही थ।तीसरी रात आ चली थी नीता का हाश नही आया था।आर डाक्टर्स सलाह मशवरा करन पहच गए थ।वाल कि वाडी रिसपाड नही कर रही ह।ईश्वर का जाप चल रहा था।लागा की भीड वढ रही थी।किसी न काल तिल का हाथ लगवाकर दान करवाया, ता किसीन काली सावत दाल ; जिसस पाण आसानी स निकल जाए।पर हाय री हमारी सामाजिक एवम् दकियानसी परम्पराए अभी पाण जान का समय नही आया था ता कस ®

कमर क वाहर वहत भीड थी।जितना जितना सवध उतना ही दख ; उतना ही दिखावा।ज्ञात हआ कि रघ अपनी वीमार पत्नि क पास स उठ ही नही सिवाय शाच क।सा एकमत हा सव वाल कि तभी नीता क पाण अटक पड ह।अव रघ स यह कान कह कि कहा फ़्ला नीता मन अपन माह स तझ आजाद किया√।अजीव हालात ह कि मातमपरसी क लिए सव तयार खड ह परन्त मातम नही हा रहा।जिस मात स सव भय खात ह उसी का वहद वचनी स हर पल इतजार हा रहा ह।क्या पता किस पल ।दिखाव क लिए हर काई वही ठहरना चाहता था।वही कछ कमर भी ल लिए गए।काई वही साया काई घर गया।हालत न सधरन पर स्पशलिस्ट की टीम आई ।उन्हान वताया कि एक नई दवाई आई ह यदि आप लिखकर द ता आजमाया जा सकता ह।रघ न एक पल की दर किए विना आशा की इस किरण का अपन भाग्य का एक इशारा समझा।आर हामी भर दी।उस लगा आकाश स दवगण उसकी पकार सनकर एकत्र हाकर अमृत लकर आए ह। आग जसी हरि इच्छा

दवाई मगाकर दी गई।सव का घर जाकर इत्मीनान स सान का कह दिया गया।रघ व अनन्या वही ठहर।

वच्च हालात स वखवर घर म मस्ती कर रह थ।जमीन पर विछ गद्दा की उठा पटक म लग थ।अपन ममी पापा का आया दखकर सवन वाहर खाना खान की फरमाईश की।दाड पडी कार फास्ट फड क लिए।खान क वाद सहज भाव स आशीष विल चकान लगा ता उसकी पत्नि शचि न काहनी मार क उस मना कर दिया।उसी क्षण पवश न विल चकाया।उसन मझली भाभी का इशारा करत दख लिया था।शचि की यह हरकत उसक अतस का जख्मी कर गई।खर वात का तल दन का यह उचित समय नही था इसलिए वह चप रहा।विनीश की पत्नि रूहमा न पति स कहा कि फला क एक दा टाकर मगवा ला इकट्ठ वच्च कभी भी खान का मागत ह।सनत ही शचि वाली \चप वठी रहा भाभी।पवश आर गिन्नी स कहा क्या लाना ह।पिताजी कमात ह अभी उनकी कमाई पर सव वच्चा का हक ह।यहा इडिया आकर घर म भी हम क्या पस खर्च कर।ख़रूहमा यह

©Veena Vij

सनकर चप बठ गई।नाकर राम पानी दन आ रहा था।उसन यह सारी बात सनी।रसाई म वापिस जाकर वा धम्म स जमीन पर बठकर रा पडा कि माजी अस्पताल म मात स जझ रही ह।इतना ढर सारा पसा खर्च हा रहा ह।य आलाद ®छिः छिः मदद करन की अपक्षा क्या आए ह य सव®मात्र औपचारिकता निभान या फिर अपन अपन हिस्स का खर्चा करवान।इसस अधिक वह साच नही सका।उसक काना म बहजी की कर्कश आवाज सनाई दी \राम बच्चा क लिए मिल्क शक बना लाआ।ख़

तभी टन् टन् टन् टन् फान की घटी बजी।अनन्या थी फान पर जार जार स राए जा रही थी।गिन्नी न फान उठाया।वा भी रान लगी।उसी पर सब अस्पताल क लिए भाग।वहा पडितजी फ़ीता√क आठव अध्याय का पाठ कर रह थ।रघ न नीता का हाथ कसकर मट्ठी म थामा हआ था।वाकि सब जार जार स हिचकिया लकर रा रह थ।माना मृत शरीर का अभी नीच उतार दग यदि रघ हाथ छाडग ता।अचानक विनीश न दखा कि मा क पर का अगठा हिला।झट वह मा क कान क पास जाकर वाला फ़ामा मामा आख खाला।दखा हम सव आए ह।वह कभी मा का माथा चमता कभी कध हिलाता।जार जार रा रहा था वह दीवाना सा।आर सब क्या दखत ह कि मा की आखा स आस वह निकल।विनीश न मा क आस भर तपत गाला का जा कि एस गर्म हा गए थ जस वारिश क वाद हरी पत्तिया हा जाती ह प्यार स पाछा।हर्षातिरक स सब जार जार स ईश्वर का धन्यवाद करन लग।रघ व बच्चा क चहर खशी स चमक उठ।मा म पाण सचार हा रह ह दखकर पवश डाक्टर क पास भागा।लकिन फिर वही हालत ।वाहर बठ रिश्तदार फिर काना फसी करन लग फ़ारघ नीता का छाड नही रहा तभी पाण जा जा कर वापिस आ रह ह।इसका माह भग हाना आवश्यक ह।इसन उस पमपााश म बाधा हआ ह।भई इस कलयग म कही सावित्री की तरह सत्यवान का मात क मह स वापिस लाया जा सकता ह।√पत्यक्ष जाकर रघ स कहन की हिम्मत काई नही कर सका।

विधी क विधान म भला कान हस्तक्षप कर सकता ह।बडी बसवी स सब हानी का तमाशा दख रह थ।उधर बच्चा न दखा कि पापा की आखा स अविरल अश्रधाराए वह रही ह।व एकटक मा का दख जा रह थ।पास खडी दाना वआ भी पापा की हालत पर बिलख बिलख कर रा रही थी।चाथा दिन हा गया था रघ का अपनी सधि नही थी।न जान आखा न आखा का क्या मक सदश दिया कि मृतपाय नीता की पलका म स्पदन हआ।जिस रघ व अनन्या न एकसाथ नाटिस किया।आश्चर्य व हर्ष स दाना न एक दसर का पकड लिया।हजारा उम्मीदा क चिराग उनक भीतर जगमगा उठ।

डाक्टर्स की टीम आ गई।व आशान्वित हा उठ।फटाफट इजक्शन्स दिए।इधर सभी नीता का दखन दाड।नीता न आख खालकर अपन चारा आर दखा।यह दख डाक्टर्स खशी स बाल कि इनका शरीर मृत था नई दवाई न असर ता दिखाया ही ह लकिन आप सब क पम पार्थना व सवा न इन्ह पनः जीवन दिया ह।यह ता करिश्मा हा गया ह।अभी इन्ह कछ दिन आर अस्पताल म रखना पडगा।वस अव य खतर स वाहर ह।सब का मह मीठा कराया गया।घर म फर्नीचर पनःसजा दिया गया। खशी की राशनी जगमगा उठी।रिश्तदार भी वापिस जान लग थ।माना किसी काम का अजाम तक पहचान आए थ परन्त नाकामयाव हाकर मायस लाट रह थ।राम सन रहा था \हम य ही य ढर सार कपड लाए।अगली वार पता नही आना हा पाएगा भी कि नही®ख़

पापा आर वच्च सब क चहर चमक उठ थ।परदसी वटा क जान का समय आ गया था।रघ का इतजार था कि दाना वट उस पस पकडाएग।आखीर डालरा म कमात ह।फिर एस माका पर ही ता वटा का फर्ज हाता ह मदद करना।उनक जान की घडी आ गई।आखा म आस

©Veena Vij

भरकर सवन मा स प्यार किया।साथ ही कहा कि अपना ध्यान रखना।अव जल्दी आना नही हागा।दर का मामला ह।मा अभी वात नही कर पाती थी सा रात हए सवका गल लगाया व पात पातिया का छाती स चिपका लिया।रघ न ता माना विदाई की रस्म निभाई।अव जाकर उसका माहभग वास्तव म हा गया था।

नीता की वीमारी न उसका ससारिक नाता स पहचान करवा दी थी।ज्या ज्या समय वीत रहा था रघ की वितृष्णा वढती जा रही थी।लकिन उसका लक्ष्य उसका प्यार उसका जीवन साथी अव उसक साथ था।

वीणा विज फ़ुदित√

©Veena Vij